वन्दे वीरम्

युवाचार्यादि-पदोत्सव

श्रीसेठिया जैन ग्रन्थालय।
बीकानेर।

प्रकाशक—

श्री साधुमार्गी जैन पूज्य श्री हुक्मीचंद जी
महाराज का समाज-हितैषी-श्रावक मंडल
मन्दसौर [मालवा]

प्रथमावृत्ति
१०००] मूल्य चार आने [वीराब्द २४५४

युवाचार्यादि-पदोत्सव

युवाचार्यादि-पदोत्सव।

पक्षपातो न मे कश्चिन्न द्वेषोऽप्यस्तिविद्यते ।
युक्तिमद्वचनंयत्तु तदेवेह निबध्यते ॥

पूर्व विवरण

श्री साधुमार्गी-समाज का अभ्युदय-काल निकट आया तो चारों ओर से आवाज़ उठने लगी कि 'साधु-सम्मेलन अवश्य होना चाहिए।' इसी उद्देश्य से विभिन्न सम्प्रदायों के मुख्य-मुख्य नेताओं का एक डेप्युटेशन (प्रतिनिधि-मण्डल) सभी सम्प्रदायों के पूज्यों एवम् मुख्य साधुओं से मिला और अजमेर में एकत्र होने के लिए उनसे अनुनय-विनय की। पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज को खास कर कहा गया कि आपको वहां अवश्य पधारना चाहिए। इसीलिए सन्तों ने पूज्य श्री को अपने कन्धों पर उठाया और उन्हें अजमेर के समारोह में

वातावरण चालू कर दिया था। जब अजमेर के बीच खरवा पहुँचे तो दोनों पूज्यों का एक मन्दिर में वार्तालाप हुआ। अन्त में सन्ध की कोई योजना तय न हुई। तब पूज्य श्री अमोलख ऋषि जी, शतावधानी जी, कवि नानचन्द्र जी, पूज्य श्री काशीराम जी महाराज, आदि ने यह बात सुझाई कि किसी को मध्यस्थ मुकर्रर किए बिना सन्ध होना कठिन है। इस पर उपर्युक्त मुनिराज और मन्नालाल जी महाराज—यों इन पांच मुनियों को दोनों ओर से मध्यस्थ बनाया गया। और निम्न प्रकार से प्रतिज्ञा पत्र लिख दिया गया—

प्रतिज्ञा—पत्र

संवत् १९९० चैत्र शुक्ला ५ शुक्रवार

स्थल खरवा। (ब्यावर के पास)

दोनों पूज्य पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज और पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज अपने-अपने पक्ष के दोनों का निपटारा करने के लिए दोनों पक्ष के दो-दो प्रतिनिधि और एक सरपंच ऐसे पांच साधुओं की एक कमिटी नियत करते हैं।

पूज्य मन्नालालजी म० की तरफ से— पूज्य जवाहरलाल जी म० की तरफ से—

(1) पूज्य श्री अमोलख ऋषि जी म० (2) पं० श्री मन्नालाल जी म०

(3) कविवर्य श्री नानचंद्र जी म० (4) ,, ,, गणेशचन्द्र जी ,,

सरपंच—

युवाचार्य श्री काशीराम जी महाराज

उस झोली को पूज्य श्री आमोलख ऋषि जी महाराज, शतावधानी पंडित मुनि श्री रतनचन्द जी म०, कविवर्य पंडित मुनि श्री नानचन्द्र जी म०, पूज्य श्री काशीराम जी म०, उपाध्याय जी श्री आत्माराम जी म०, गणि श्री उदयचन्द्र जी म०, पंडित श्री मणीलाल जी म०, युवाचार्य श्री नागचन्द्र जी म०, पं० मुनि श्री छगनलाल जी म०, पं० मुनि श्री माणकचन्द्र जी म०, और पंडित मुनि श्री रामकुँवार जी म० आदि २ प्रसिद्ध, विद्वान् और वक्ता मुनिवरों ने भी अपने कंधों पर उठाने का सौभाग्य प्राप्त किया था। इस विशाल मुनि-समुदाय का एवं विराट् मानव-मेदिनी का जुलूस जिस समय अजर-अमरपुरी अजमेर के मध्य बाज़ारों में होकर निकल रहा था उस समय की शोभा का दृश्य बड़ा ही मनोहर और अभिराम था। जिसकी सुन्दरता का कुछ दृश्य पाठकगण इसी पुस्तक में चित्र द्वारा अवलोकन करेंगे ।

कुछ दिनों के बाद मध्यस्थ मुनियों ने सम्प के सम्बन्ध में भूतकालीन फैसला दिया । वह इस प्रकार है—

भूतकाल का फैसला

सम्वत् १९९० चैत्र सुदी १३ शुक्रवार के रोज श्री अजमेर में दोनों पूज्यों की तरफ से नियत की हुई कमिटी, दोनों तरफ के पुरावे देख कर व उनकी बाबत परस्पर पूछ-ताछ कर, नीचे [illegible]

को पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज ने स्वीकार किया । क्योंकि पंचों को लिख कर तहरीर दे दी थी कि आप जो करें वह हमें मन्जूर है । इसी बात को कायम रखने के लिए पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज ने, अपने हक में न होते हुए भी, भूतकाल के फैसले को मन्जूर किया । इस फैसले में पंचों ने दोनों आचार्यों को चेतावनी दी, कि बारह सम्भोग का निर्णय आपस ही में तय कर लें । लेकिन आपस में तय नहीं हुआ । अतएव पञ्चों ने फिर निम्नलिखित लेखी सूचना पूज्य श्री मन्नालाल जी म० के पास भेजीः—

अजमेर
ता० १६-४-३३

पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज,

अजमेर

आप दोनों पूज्यों ने पंचनामे में लिख दिया है कि "भूतकाल का निर्णय हो जाने के बाद भविष्य के लिए बारह संभोग, एक युवाचार्य, एक समाचारी, आदि का निर्णय पञ्च करेंगे वो दोनों को मंजूर करना पड़ेगा" ऐसा लिखा है । इस लेख के अनुसार, भविष्य का फैसला देने का पंचों को अधिकार दिया है । जिससे आप हाल (चार वर्ष) तक दोनों पूज्य बराबर मिल के भविष्य का फैसला कर ले । यदि ऐसा किया तो पञ्चनामे की शर्त के अनुसार भविष्यकाल के विषय में पञ्च

पूज्यों की मौजूदगी तक दोनों पूज्यों की रहेगी । और एक आचार्य रहने पर एक आचार्य की होगी ।

(६) फैसला मिलने के साथ परस्पर बारह सम्भोग खुला करें ।

द० अमोलक ऋषि   द० मुनि मन्नालाल

द० मुनि रत्नचन्द्र   द० मुनि नानचन्द्र

द० मुनि काशीराम

इस प्रकार का फैसला मिलते ही पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज का हृदय हर्ष के मारे बांसों उछलने लगा, क्योंकि भूतकाल का फैसला तो उनके हक में रहा ही, भविष्यकाल का फैसला भी उन्हीं के हक में रहा, इसलिए यह भविष्यकाल का फैसला और अच्छा रहा । कुआचार्य श्री अपना और चेले की मन चाहते । भला अब क्या कमी रही ! पचास वर्ष के बाद पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज के साधुओं का अस्तित्व भी नहीं रहेगा । क्योंकि होने वाले सब चेले गणेशीलाल जी के होंगे—पंचों ने ऐसा फैसला किया । इस फैसले ने पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज के दिल में हर्ष की एक बड़ी भारी गुदगुदी पैदा कर दी । पंचों ने भी सोचा, कि चाहे यह न्याय हो या अन्याय, यह नियम हम तो लागू कर देंगे । इस नियम के बल पहुंचने पर फिर इन सबको स्वतन्त्रता से शिष्य करके चेले क्यों करते होंगे, इन सब चेलों-चेलियों जवाहरलाल के पुत्रों के होंगे ।

प्रिय पाठक, एक जगह सम्भोग और दूसरी जगह नहीं: अजमेर में सम्भोग और व्यावर में नहीं! यह क्या जैन सिद्धान्तानुसार न्याय है? नहीं, ऐसा करना आचार्य के लिए कलंक की बात है। 'पर समरथ को नहिं दोष गुसाईं' के नाते पूज्य जवाहरलाल जी को कौन कहे? उधर सत्याग्रही मुनि मिश्रीलाल जी कहते हैं कि जब अजमेर में सम्भोग हो गया और यहाँ नहीं होगा तो मैं अपना सत्याग्रह नहीं छोड़ूंगा। अन्त में समाज के नेता एक डेप्युटेशन के रूप में हुए और उन्होंने दोनों पूज्यों तथा बहुत से मुनियों को एक जगह एकत्र किया। वहाँ पर पंचों के दिए हुए फैसले की उपेक्षा कर फिर नवीन फैसला दिया गया। यदि कोई यों कहे कि मुनियों का दिया हुआ फैसला रद्द नहीं किया गया तो हमें उसकी समझ पर तरस आता है। क्योंकि जब वह फैसला रद्द नहीं था तो फिर उस फैसले की शर्तों को तीसरे फैसले में दोहराने की क्या जरूरत थी? आवश्यकता तो इस बात की थी, कि सभी जगह सम्भोग खोलने की शर्त ही स्वीकार कराई जाय; बस यही शर्त ही केवल अमल में नहीं लाई गई थी। सभी शर्तों को फिर से अन्य फैसले में दोहराना पहले के फैसले को रद्द करना है।

दर असल में बात यह थी, कि युवाचार्य-पदोत्सव की चिन्ता सता रही थी। उसकी तिथि निश्चित करानी थी। तीसरे फैसले को देख कर बस यह बात साफ मालूम पड़ जाती

लें; परन्तु जो सरपंच नियत करने में एकमत न हो तो श्री वर्द्धमान जी सा० पितलया तथा श्री सौभागमल जी साहब मेहता ये दोनों साथ मिल कर मतभेद का समाधान कर दें। उन में भी मतभेद रहे तो दोनों गृहस्थों ने सीलबन्द कवर प्रेसिडेण्ट सा० को दिया है। उस में लिखे हुए नामवाला पंच दोनों गृहस्थों के सरपंच के तौर पर जो निर्णय देवे सो अन्तिम समझा जाय।

(३) मुनि श्री गणेशलाल जी महाराज को युवाचार्य-पद तथा मुनि श्री सूरचन्द जी महाराज को उपाध्याय-पद सं० १९९० के फागुन सुदि १५ पहिले देने की क्रिया होना निश्चित किया है।

(४) फागुन सुदि १५ के बाद नए शिष्य हों, वे युवाचार्य श्री की नेसराय में रहें।

उपरोक्त ठहराव कॉन्फरेन्स के प्रेसीडेण्ट सा० श्री हेमचन्द भाई तथा डेप्युटेशन के गृहस्थ और साधु-सम्मेलन में पधारे हुए मुनिराजों के समक्ष पढ़ सुनाया है। और सभी ने सर्वानुमत से स्वीकृत फरमाया है।

इस प्रकार के फैसले को अपने हक में न होते हुए भी, पूज्य श्री मन्नालाल जी महाराज ने संघ की शान्ति के लिए स्वीकार किया और ब्यावर में चातुर्मास करने के लिए अजमेर से विहार कर दिया। पूज्य जवाहिरलाल जी महाराज ने अजमेर से उदयपुर चातुर्मास के लिए विहार कर दिया। पूज्य महा-

दोनों सम्प्रदायों पर फैसले के अनुसार हो जाती तो फिर वे धारा-धोरण बाँधने की बात ही क्यों कहते? क्योंकि दोनों सम्प्रदायों पर जब उनका पूर्ण अधिकार हो गया तो फिर धारा-धोरण चीज़ ही क्या थी। अतएव पूज्य जवाहिरलाल जी म० का यह कथन करना ही इस बात का द्योतक है, कि वे अभी दोनों सम्प्रदायों के पूर्ण अधिकारी नहीं हुए हैं।

जब चातुर्मास के अवसर पर प्रेसिडेण्ट उदयपुर होते हुए इधर आए थे। मुनि श्री चौथमलजी महाराज ने उनको कहा कि हमारे पूज्य का स्वर्गवास हो गया; अतः हम सब मुनि चातुर्मास पूर्ण होते ही स्थविर श्री नंदलालजी महाराज के पास पहुँचेंगे। पूज्य जवाहिरलाल जी महाराज का भी यही फर्ज़ है कि वह यथा शीघ्र रतलाम पहुँच कर स्थविर महाराज को आश्वासन दें। नियम-उपनियम भी वहीं बनेंगे।

कार्तिक मास में उदयपुर से पूज्य जवाहिरलाल जी म० का सन्देश आया कि चातुर्मास की समाप्ति पर मुझ से गंगापुर में मिलें। मुनि श्री चौथमलजी महाराज ने उत्तर दिया कि गंगापुर में श्रावक तो घर थोड़े हैं। दूसरा, कोई वहाँ आना-जाना चाहे तो उसके लिए स्टेशन से गंगापुर बहुत दूर पड़ेगा। अतः मिलना तो चित्तौड़ में ही ठीक। यह स्थान दोनों बातों के अनुकूल भी है। पर कार्तिक शुक्ला ५ को. इन्दौर निवासी श्री शिखरचन्दजी कड़ावत के द्वारा, पूज्य जवाहिरलाल जी म० ने यह समाचार भिजवाया कि चित्तौड़ में तो दो घड़े

साम्प्रदायिक सम्बन्धी धारापोरव आदि तो श्रीमान् स्थविर पंडित मुनि श्री १००८ श्री नन्दलाल जी महाराज साहब की सेवा में रतलाम ही होना उचित होगा। क्योंकि स्वर्गीय पूज्य श्री १००८ श्री मन्नालाल जी महाराज साहब की भी यही इच्छा थी। और स्थविर महाराज सा० की भी यही इच्छा है। इसीलिए सभी स्थानों के मुनियों को रतलाम बुलाने के समाचार यहाँ से आ चुके हैं। और बड़े महाराज की वृद्धावस्था के कारण श्रीमान् खूबचन्द जी महाराज साहब उनकी सेवा छोड़ना नहीं चाहते हैं। और श्रीमान् खूबचन्द जी म० का शरीर भी कमजोरी आदि शारीरिक कारणों से ठीक नहीं रहता है। इस वास्ते साम्प्रदायिक सम्बन्धी विचार-विनिमय तो श्रीमान् बड़े महाराज की सेवा में रतलाम में होने में विशेष सुविधा रहेगी। यह बात पहले भी श्रीमान् वर्धमान जी पिरोदिया रतलाम वाला की मार्फत पूज्य श्री की सेवा में अर्ज करा चुके हैं। सो आप यह उत्तर नर हालात पूज्य महाराज सा० की सेवा में अर्ज कर दिरावें। योग्य सेवा लिखें।

द्वारा—

चांदमल टोडरवाल

उदयपुर से पूज्य जवाहिरलालजी महाराज के जो समाचार रतलाम गये थे वे इस प्रकार हैं:—

श्री

सिद्ध श्री रतलाम शुभ स्थान सर्वोपमा लायक श्री वर्धमान

के निवासियों की प्रार्थनाओं को स्वीकार न करते हुए उग्रता से बढ़कर निम्बाहेड़े की ओर आ ही रहे थे। यहाँ तक की एक साधू को जोरों से बुखार आता था तो भी वे उनकी बुखार की हालत में भी विहार करते हुए पधार रहे थे। मगर मार्ग में ज्वर ने जोर पकड़ा तब गंगापुर रास्ते में पड़ा तो वहां पर औषधोपचार के लिए मुनि श्री को ठहरना पड़ा। यहाँ पर पूज्य श्री के समाचार आये तो उनको समाचार करवा दिये थे कि मुनि जी का ज्वर कुछ कम होते ही शीघ्र आ रहे हैं। इतनी सूचना कर देने पर भी पूज्य जवाहिरलाल जी म० ने तार दिलवाया और शीघ्रता के लिए लिखवाया। तो क्या मुनि श्री चौथमल जी म० साइकल पर चढ़कर चले आते? मुनि की वृत्ति है। फिर एक साधु को बुखार था ऐसी स्थिति में भी विहार करते हुए आ ही रहे थे। और फिर निम्बाहेड़े पहुँच कर यह सभी स्थिति पूज्य जवाहिरलाल जी म० से मुनि श्री चौथमल जी म० ने स्पष्ट प्रकट भी कर दी थी। इतना सब होते हुए भी हितेच्छु मंडल द्वारा प्रकाशित पदोत्सव के 'निवेदन-पत्र' के पृष्ठ ४ पर लिखा गया है कि "नियत तिथि को आठ नौं दिन बीत जाने पर भी मुनि श्री चौथमल जी महाराज नहीं पधारे"। इनका ऐसा लिखना अन्याय संगत और द्वेष से परिपूर्ण है।

अस्तु श्री चौथमल जी महाराज भी करेड़े से विहार कर रायपुर गंगापुर होते हुए शीघ्र ही पोस विदी १२ शुक्रवार को निम्बाहेड़े पधारे। पूज्य जवाहिरलाल जी महाराज ने

नोट—इस लेख की एक नकल ता० २७-१-३४ को रजिस्ट्री द्वारा जैन प्रकाश में प्रकाशनार्थ भेज दी थी।

जावद से आमन्त्रण पत्र व दो भाई आए थे। उनके समाचार सुन कर भावी पूज्य श्री खूबचन्द जी महाराज ने ता० २६-१-३४ को यह फरमाया कि—'पूज्य श्री ने स्थविरों की तथा मेरी सम्मति लिए बिना ही मुनि घासीलाल जी आदि आठ सन्तों को अथवा निम्बाहेड़े में पूज्य श्री मन्नालाल जी म० के मुनियों का सम्भोग पृथक् किया जिससे साधु-सम्मेलन का १४ वाँ नियम पूज्य श्री के द्वारा भंग हुआ। आदि इन सब बातों का समाधान व शुद्धि होकर प्रसिद्धि में न आवें तब तक मैं क्या उत्तर दे सकता हूं?

दूसरी बात यह है कि मुनि घासीलाल जी पूज्य श्री तथा मुनि श्री गणेशीलाल जी के लिए जो-जो आक्षेपजनक बातें कहते हैं उनका समाधान भी सम्प्रदाय के मुनियों की कमेटी द्वारा प्रगट होना भविष्य के लिए ठीक होगा। और वास्तव में ऐसा करना परम आवश्यक भी है।

उपरोक्त बातों के स्पष्टीकरण के पश्चात् स्थविर गुरु जी श्री नन्दलाल जी म० के समक्ष धाराधोरण बंधने के बाद युवराज व उपाध्याय आदि पदवियों की निर्धार करने की तिथि व स्थान निश्चित किए जावेंगे।

यदि इतने पर भी पूज्य श्री अपनी इच्छानुसार ही करना चाहते हैं तो मेरी उसमें किंचित भी सम्मति नहीं है।

हम मुनि श्री खूबचन्द जी के आचार्य पद पर नियुक्त होने पर हार्दिक प्रसन्नता प्रगट करते हैं।

श्री संघ अजमेर

ब्यावर से— 17-2-34

Jainodaya Pustak Prakashak Samiti Ratlam.

Overjoyed being Maharaj Shree Khubchand ji appointed Pujyaji may live long.

—Kundanmal Lalchand.

महाराज श्री खूबचन्द जी के पूज्य पद पर नियुक्त होने पर बड़ी प्रसन्नता हुई। महाराज श्री बहुत दिन जीवित रहें—यह प्रार्थना है।

सेठ कुन्दनमल लालचन्द ब्यावर

उदयपुर से— 17-2-34

Master Mishrimal ji Ratlam.

Read telegram very glad by this news.

Shree Sangh.

इस शुभ समाचार का तार पढ़ कर बड़ी प्रसन्नता हुई।

श्रीसंघ उदयपुर

हैदराबाद से—

17-2-34

Mishrimal master Jainodaya Pustak Praka-

असिस्टेन्ट सेक्रेटरी श्रीमान घीसूलाल जी सा० प्रमुख थे। इन्होंने रतलाम आकर पूज्य श्री खूबचंद जी महाराज की सेवा में निवेदन किया कि आप अपनी ली हुई पूज्य पदवी वगैरह से मुनि मिश्रीलाल जी की मानरक्षा और संघ की शान्ति के लिए छोड़ दें। पूज्य श्री खूबचंद जी महाराज ने कहा कि ठीक है हम सभी पदवियाँ छोड़ने के लिए तैयार हैं। हमारे और पूज्य जवाहरलाल जी म० के सम्भोग टूटने के बाद जो हमारी तरफ से पदवी आदि हुई है वह, और पूज्य जवाहरलाल जी म० ने युवराज पैदा करने के लिए सम्प्रदाय के सभी साधुओं की सम्मति बिना ही जो युवराज पदवी दी है वह, इस प्रकार दोनों तरफ की ओर से दी गई पदवियाँ वापस खींच ली जाय और फिर सम्प्रदाय में ऐक्य करने के लिए सभी मुनि मिल कर सर्वसम्मति से श्री गणेशीलाल जी को युवराज पदवी को पुनः प्रदान करें। इस में हम तैयार हैं। इस प्रकार के उत्तर को लेकर श्री घीसूलाल जी ने ब्यावर पहुँचकर समझाया। वे पूज्य श्री की इस महान उदारता के लिए बड़े ही प्रसन्न हुए और कहने लगे कि धन्य है आपकी ऐसी और शान्ति-प्रियता को। आप अपनी पदवियों को वापस खींच रहे हैं। आपकी इस उदार-वृत्ति के लिए आपको कोटिशः धन्यवाद है। पूज्य हों तो ऐसे ही हों। इस प्रकार उन्होंने आपके गुणों के बहुत गान किये।

फिर वे वहां से पूज्य श्री जवाहरलाल जी महाराज के पास

...किया।"

इस प्रकार लिखना प्रेसिडेन्ट महोदय का अन्याय पूर्ण ... क्योंकि पूज्य श्री के सन्तों ने कोई भी विपरीत वर्तन नहीं ...या। विपरीत वर्तन किधर से हुआ है? इस विषय में हम ...लेख में पहले बहुत कुछ लिख चुके हैं किन्तु यदि पाठक ...हेंगे तो इस विषय में सप्रमाण विशेष स्पष्टीकरण ...श्यक करेंगे।

आगे चलकर लिखते हैं कि "धारापोरण के लिए रतलाम का आग्रह क्यों होना चाहिए?"

इसका स्पष्टीकरण ऊपर कर चुके हैं। फिर भी निवेदन है ...दि रतलाम में अखिल भारतीय स्था० साधुसमाज में पूजनीय ...योवृद्ध स्थविर गुरु जी विराजमान हैं। अतः इन महापुरुष ...की शुभाशीष प्राप्त करने के लिए ही स्वर्गीय पूज्य श्री ने ...धारापोरण रतलाम में ही बांधने के लिए फरमाया था। किन्तु ...फिर भी अपनी टेक रख के रतलाम आकर धारापोरण नहीं ...धे और समाज में फूट के अंकुर पैदा किए।

आगे चल कर इसी पैरेग्राफ में लिखते हैं कि "धारापोरण ...करते-करते कहीं मतभेद हुआ होता और उतना ही खुलासा ...किसी गृहस्थ को रतलाम भेज कर मु० श्री नन्दलाल जी म० ...सा० के पास से खुलासा मँगाने का आग्रह किया होता तो ...ठीक था।"

बस यही तो बात है कि गृहस्थ को बीच में डालने का

अनेक प्रपंच रचने पड़ेंगे और ये इसी चिन्ता में रात दिन व्यस्त रहेंगे । कहिए, फिर श्रावकों का भला कैसे हो सकता है ?

आगे चल कर लिखते हैं "कि पंच के मेम्बर मुनिराज साहबों को मेरी विनंति है कि जयपुर के श्री संघ के पास से अथवा श्री दुर्लभ जी भाई जौहरी को आज्ञा कर के महाराज श्री चौथमल जी और घासीलाल जी को शांति के सन्देश भेजें और एक्य प्रयत्न करने की सूचना करें।"

पाठको, देखा प्रेसिडेन्ट सा० के लिखने का ढंग ? जब संघ में शान्ति होने के लिए पंच मुनिराजों की तरफ से प्रेसिडेंट सा० के पास पत्र गया तब गुमनाम, अपरिचित व्यक्ति आदि कह कर टाल दिया और ऊपर लिखते हैं कि शान्ति का सन्देश भेजें। पाठक स्वयं निष्कर्ष निकालें कि गफलत और लापरवाही किसकी तरफ से हुई ?

मुनि श्री चौथमल जी

ध्येय था कि स...

एक कमेटी नि

श्री

और

तो

भाग्यशाली मन्दसौर में

युवाचार्यपदवि-पदोत्सव

मङ्गलाचरण

(१)

नेता नीतिविदां सुभाषितवतां विद्वन्मुनीनां च यः ।
निर्मानः समलङ्करोति सततं तीर्थैः प्रदत्तं पदम् ॥
श्रोतॄणां मनसां भ्रमं विधुनते सर्वं सुधा सूक्तिभिः ।
पूज्यः पूज्यवरः सदा विजयतां श्री खूबचन्द्रो मुनिः ॥

(२)

उत्साहं वर्धयन्नित्यं प्रमोदं प्रथयत्परम् ।
छगनलालमुनिर्मान्यो भूयाद् भारतमण्डले ॥

(३)

प्रभुचरण पवित्रे लोक विश्रुत चरित्रे ।
प्रतिपदमभिरामे मन्दसौराख्यग्रामे ॥
छगनमुनिवरस्य धर्मनिष्ठापरस्य ।
समभवतिरम्यो यौवराज्याभिषेकः ॥

(४)

महोत्सवेऽस्मिन् श्रमणाङ्घ्रि पूते ।
जनाः समायुः स्वजनैः समेताः ॥
समे युवाचार्यमुखं निरीक्ष्य ।
भूपना [illegible] ॥

[illegible] के विरोध का प्रस्ताव पास किया। इस पर पूज्य श्री [illegible]लाल जी म० [illegible] कान्फ्रेंस का बहिष्कार कर दिया। [illegible] आगरा, अजमेर, उदयपुर, [illegible] आदि पचासों शहरों के [illegible] प्रस्ताव करने पर भी [illegible] यहाँ तक कि कई अच्छे आदमियों ने [illegible] कान्फ्रेंस की [illegible] के विरोध में पुन [illegible] प्रस्ताव पास किया तो [illegible]

[illegible]

भाग्यशाली मन्दसौर में

पुण्याचार्यादि-पदोत्सव

मङ्गलाचरण

(१)

नेता नीतिविदां सुभाषितवतां विद्वन्मुनीनां च यः ।
निर्मानः समलङ्करोति सततं तीर्थैः प्रदत्तं पदम् ॥
श्रोतॄणां मनसां भ्रमं विधुनुते सर्वं सुधा सूक्तिभिः ।
पूज्यः पूज्यवरः सदा विजयतां श्री सूर्यचन्द्रो मुनिः ॥

(२)

उत्साहं वर्धयन्नित्यं प्रमोदं प्रददन्नरम् ।
छगनलालमुनिर्नाम्नो भूयाद् भारतमण्डले ॥

(३)

प्रभुवरस पवित्रे लोक विश्रुत चरित्रे ।
प्रतिदिनमभिराने मन्दसौराख्यमाने ॥
छगनमुनिवरस्य धर्मनिष्ठावरस्य ।
समभवदिह भव्यो यौवराज्याभिषेकः ॥

(४)

महोत्सवेऽस्मिन् मनसाऽतिपूते ।
जनाः समागुः स्वजनैः समेताः ॥
सर्वे सुधाचार्यमुखं निरीक्ष्य ।
बभूवनादित्यसमानिताश्च ॥

[illegible]

[illegible]

[illegible]

(१५) श्री० गेंदकुंवर जी म०   (१६) श्री० सौभागकुंवर जी म०
(१७) „ शंभुकुंवर जी म०   (१८) „ शीलकुंवर जी म०
(१९) „ केशरकुंवर जी म०   (२०) „ चतुरकुंवर जी म०
(२१) „ प्रताकुंवर जी म०   (२२) „ सुन्दरकुंवर जी म०
(२३) श्री राजमति जी म०

इस प्रकार समस्त मुनि और महासतियाँ जी १०१ महोत्सव में उपस्थित हुए। माघ शुक्ला १० से उदयपुर, बड़ी सादड़ी, निम्बाहेड़ा, महागढ, संजीत, जावरा आदि शहरों से लगभग १०० स्वयंसेवक सेवाभाव से प्रेरित होकर आए हुए थे। इन सब की पोशाकें बड़ी सुन्दर थीं। हँसमुख चेहरा और उमड़ता हुआ हृदय—बस एक सुशील स्वयंसेवक के लिए और चाहिए ही क्या ? मृग के पास कस्तूरी है, यही बहुत है।

मुनि श्री के व्याख्यान माघ शुक्ला १० से ही उपरोक्त पण्डाल में प्रारम्भ हुए। माघ शुक्ला १० के पहले से ही दर्शनार्थियों का आना प्रारम्भ हो चुका था। माघ शुक्ला ११ के दिन व्याख्यान में आई हुई जनता का हृदय देख कर चिन्ता होने लगी कि लोग कहाँ बैठेंगे ? इतना विशाल पण्डाल होते हुए भी उस में जगह कम पड़ रही थी। हाँ, पण्डाल के आस-पास खुली जगह और लम्बे-चौड़े प्रांगण हैं—वहाँ बैठ जायेंगे।

रतलाम से स्पेशल ट्रेन।

माघ शुक्ला १२ को रतलाम से एक स्पेशल ट्रेन वहाँ के

पूज्य श्री एवं थाँदला के विद्यार्थियों का मंगलाचरण हुआ। तदनन्तर मुनि श्रियों की ओर से मंगलाचरण हुआ। फिर रामपुरे के विद्यार्थियों का और स्थानीय पाठशाला के छात्रों का 'वेलकम' (Welcome-स्वागतम्) ड्रामा हुआ। इसके बाद मुनि श्री कस्तूरचन्द जी महाराज ने अपना वक्तव्य दिया। फिर स्थानीय पाठशाला की केसरिया रंग की साड़ी वाली ११ बालिकाओं ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध वक्ता पं० मुनि श्री चौथमल जी म० सा० ने आचार्य, उपाध्याय, गणी, प्रवर्तक आदि पदों की जिम्मेदारियाँ बड़ी खूबी के साथ अपने वक्तव्य में फरमाई। श्रोता ध्यान पूर्वक सुन रहे थे; पर विराट् जन-समूह के कारण सब लोग नहीं सुन पाए। उस समय लोगों की भावना हो उठी कि यदि लाउडस्पीकर (रेडियो) का प्रबन्ध होता तो आज सभी लोग अच्छी तरह सुन पाते। मुनि श्री के व्याख्यान पूर्ण होने के पश्चात् पूज्य मुनियों के, श्री संघों के, प्रतिष्ठित श्रीमानों के और राजा-महाराजाओं के आए हुए शुभ सन्देश श्री-जैनोदय-पुस्तक-प्रकाश-समिति, रतलाम के अवैतनिक मंत्री श्रीमान् मास्टर मिश्रीमल जी सा० ने पढ़ कर सुनाए।

आए हुए शुभ-सन्देश।

कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द्र जी महाराज का शुभ-सन्देश—

"××× आज जैन जनता विशेषतः साधु मार्गीय

पूज्य श्री एवं थांदला के विद्यार्थियों का मंगलाचरण हुआ। तदनन्तर मुनि सिर्यों की ओर से मंगलाचरण हुआ। फिर रामपुरे के विद्यार्थियों का और स्थानीय पाठशाला के छात्रों का 'वेलकम' (Welcome-स्वागतम्) ड्रामा हुआ। इसके बाद मुनि श्री कस्तूरचन्द जी महाराज ने अपना वक्तव्य दिया। फिर स्थानीय पाठशाला की केसरिया रंग की साड़ी वाली ११ बालिकाओं ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध वक्ता पं० मुनि श्री चौथमल जी म० सा० ने आचार्य, उपाध्याय, गणी, प्रवर्तक आदि पदों की जिम्मेदारियाँ बड़ी खूबी के साथ अपने वक्तव्य में फरमाई। श्रोता ध्यान पूर्वक सुन रहे थे; पर विराट् जन-समूह के कारण सब लोग नहीं सुन पाए। उस समय लोगों की भावना हो उठी कि यदि लाउडस्पीकर (रेडियो) का प्रबन्ध होता तो आज सभी लोग अच्छी तरह सुन पाते। मुनि श्री के व्याख्यान पूर्ण होने के पश्चात् पूज्य मुनियों के, श्री संघों के, प्रतिष्ठित श्रीमानों के और राजा-महाराजाओं के आए हुए शुभ सन्देश श्री-जैनोदय-पुस्तक-प्रकाशक-समिति, रतलाम के अवैतनिक मंत्री श्रीमान् मास्टर मिश्रीमल जी सा० ने पढ़ कर सुनाए।

आए हुए शुभ-सन्देश।

कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द्र जी महाराज का शुभ-सन्देश—

"××× आज जैन जनता और विशेषतः साधु मार्गीय

पूज्य श्री एवं थांदला के विद्यार्थियों का मंगलाचरण हुआ। तदनन्तर मुनि श्रियों की ओर से मंगलाचरण हुआ। फिर रामपुरे के विद्यार्थियों का और स्थानीय पाठशाला के छात्रों का 'वेलकम' (Welcome-स्वागतम्) झूमा हुआ। इसके बाद मुनि श्री कस्तूरचन्द जी महाराज ने अपना वक्तव्य दिया। फिर स्थानीय पाठशाला की केसरिया रंग की साड़ी वाली ११ बालिकाओं ने मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् प्रसिद्ध वक्ता पं० मुनि श्री चौथमल जी म० सा० ने आचार्य, उपाध्याय, गणी, प्रवर्तक आदि पदों की जिम्मेदारियाँ बड़ी खूबी के साथ अपने वक्तव्य में फरमाई। श्रोता ध्यान पूर्वक सुन रहे थे; पर विराट् जन-समूह के कारण सब लोग नहीं सुन पाए। उस समय लोगों की भावना हो उठी कि यदि लाउडस्पीकर (रेडियो) का प्रबन्ध होता तो आज सभी लोग अच्छी तरह सुन पाते। मुनि श्री के व्याख्यान पूर्ण होने के पश्चात् पूज्य मुनियों के, श्री संघों के, प्रतिष्ठित श्रीमानों के और राजा-महाराजाओं के आए हुए शुभ सन्देश श्री-जैनोदय-पुस्तक-प्रकाशक-समिति, रतलाम के अवैतनिक मंत्री श्रीमान् मास्टर मिश्रीमल जी सा० ने पढ़ कर सुनाए।

आए हुए शुभ-सन्देश।

कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द्र जी महाराज का शुभ-सन्देश—

"××× आज जैन जनता और विशेषतः साधु मार्गीय

साहित्य-प्रेमी पं० रत्न श्री प्यारचन्द जी महाराज से जैन जनता खूब परिचित है उनको गणि-पद का भार प्रदान करना भी सुसंगत है।

इसी प्रकार घोर तपस्वी श्रीमान् मोतीलाल जी महाराज तथा पं० रत्न श्री हजारीमल जी महाराज इन दोनों महानुभावों को प्रवर्तक पद समर्पण होता है। उसकी भी हम अनुमोदना करते हैं। और उन सभी मुनिराजों को अपने-अपने पद का भार वहन करने की अधिक-अधिक शक्ति प्राप्त हो। और इनके पुनीत हस्तों से सम्प्रदाय के और समाज के अधिक-अधिक सेवा-कार्य हों। ऐसी सम्भावना रखते हैं।

प्रेषक – वकील छगनलाल लखमीचन्द, नवसारी।

× × ×

भारत-भूषण लघुशतावधानी पं० मुनि श्री सौभाग्यचन्द्र जी महाराज का शुभ-सन्देश—

“× × × यह बहुत खुशी आनंद का समाचार है कि उपर्युक्त सुव्यक्तियों को उपर्युक्त पदवियाँ दी जा रही हैं।

× यह कार्य जिस नगर में होता है उसका धन्य भाग्य समझते हैं। और वह मंगलमयी कार्य शान्ति पूर्वं सफल हो जाने की कामना रखते हैं। सुना है कि उपर्युक्त पदवी के सर्वयोग्य मुनिराज प्रतापी पूज्य श्री सुखलाल जी म०

स्थित नहीं हो सकता हूँ। हमारी सम्प्रदाय के प्रवर्तनी जी श्री इन्द्रा जी महासती जी ठा० ३ सहित इस सुअवसर पर पधार रहे हैं। इस पदोत्सव में हमारी पूर्ण सहानुभूति और सम्मति है।×××"

× × ×

प्रवर्तक वयोवृद्ध स्थविर मुनि श्री दयालचन्द्र जी म० का शुभ-सन्देश—

"××× ब्यावर से श्री कालूराम जी कोठारी के मार्फत युवाचार्य-पदोत्सव की खास आमंत्रण पत्रिका मिली। पढ़ने से अति हर्ष प्राप्त हुआ।×××"

प्रेषक—जैन वर्द्धमान सभा समदड़ी (मारवाड़)

× × ×

आशुकवि पंडित रत्न मुनि श्री घासीलाल जी म० और घोर तपस्वी श्री सुन्दरलाल जी म० का शुभ-सन्देश—

"××× बड़ा ही हर्ष का विषय है कि शान्त दांत शास्त्रविशारद श्री १००८ श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री खूबचन्द जी म० के पाट पर भावी आचार्य श्री श्री १००८ श्री छगनलाल जी म० हमारे आवेंगे। इधर "खूब" अर्थात् निर्मल चन्द्र साक्षात् "खूबचन्द्र जी पूज्य हैं।" निर्मल चन्द्र की निर्मल कान्ति विकसित होने से अनेक कुमुदवन विहसते हैं। फिर अनु-कूल वातावरण कुमुद आदि की वृद्धि करता है वैसे भावी

लाल जी म० को दी जावेगी सो अत्यानन्द की बात है। ×××"

प्रेषक—श्री मोतीलाल ओस्तवाल,

× × ×

श्रीमान् रायबहादुर सेठ बिरदमल जी गाढ़मल जी लोढ़ा अजमेर का शुभ-सन्देशः—

"××× स्वामी जी श्री १००८ श्री छगनलाल जी महाराज ने माह सुदी १२ शनीवार ता० १६-२-२४ ने युवाचार्य-पद-प्रदान होवाका शुभ-अवसर पर आंवा की आमंत्रण पत्रिका आई सो पुगी छे। हमको तकलीफ होवा से शरीक होवा में मजबूरी है सो जाणसी। हमारी वन्दना मालुम करावसी। ×××"

× × ×

श्रीमान् सेठ सागरमलजी नथमलजी लूँकड़ जलगाँव (पूर्व खानदेश) का शुभ-सन्देश—

"आपका शुभ आमंत्रण पत्र मिला। बड़े हर्ष की बात है कि मन्दसौर सरीखी तपोभूमि में युवाचार्य-पद की चद्दर प्रदान का महोत्सव होगा। और इस शुभ कार्य में जैन समाज को अवश्य हर्ष होगा। मैं भी इस शुभ अवसर पर जरूर आता लेकिन मेरे पुत्र की शादी निश्चित हो जाने से मैं आने के लिए असमर्थ हूँ। इसलिए मैं इन्दौर दूकानसे मुनीमजी को भेजूंगा सो विदित हो। मैं नहीं आ सकता इसलिए बहुत दिलगीर हूँ और इसलिए माफी चाहता हूँ। ×××"

×

श्रीमान् लाला ज्वालाप्रसाद जी सा० ने कानौड़ (पटियाला स्टेट) से ता० १४-१२-२४ को जो तार भेजा था वह इस प्रकार है—

To

Jain Sangh Mandsaur.

Unable attend. Wish Success.

अर्थात्-आने में असमर्थ हूँ। कार्य में सफलता चाहता हूँ।

× × ×

श्रीमान् सेठ लालचन्द जी कोठारी ब्यावर से अपने ता०१६-२-२५ के तार से लिखते हैं—

Congratulations on Yuvarajship Sorry could not attend [illegible]

अर्थात्—युवराज महोत्सव पर बधाई। खेद है कि मैं उत्सव में सम्मिलित न हो सका।

× × ×

श्रीमान् सेठ [illegible] जी साहब अजमेर से अपने १६-२-२५ के तार से लिखते हैं-

[illegible] Maharaj [illegible]

अर्थात् - [illegible] सम्मिलित न हो सका [illegible] और [illegible] हार्दिक [illegible] हूँ।

sanctioned

अर्थात्—मुझे खेद है कि छुट्टी मंजूर न होने के कारण मैं उपस्थित नहीं हो सकता।

× × ×

श्रीमान् घौंडीराम जी दलीचन्द जी पूना से अपने ता०१४-२-३४ के तार में लिखते हैं—

Unable to attend Mahotsaw. Wishing every success.

अर्थात्—महोत्सव में सम्मिलित होने के लिए असमर्थ हूँ। हर प्रकार से सफलता चाहता हूँ।

× × ×

श्रीमान् लाला गोकुलचन्द जी ला० श्रीदत्त देहली से अपने ता० ११-२-३४ के तार में लिखते हैं—

Being marriage here cant attend.

अर्थात्—यहाँ पर विवाहोत्सव होने के कारण मैं उपस्थित नहीं हो सकता।

× × ×

हिज हाईनेस राजा साहब बहादुर [illegible] के प्राईवेट सेक्रेटरी अपने ता० १-२-३४ के पत्र में लिखते हैं—

Dear Sir,

I am to convey His Highness's thanks to you for your kind telegram dated the 24th

ही आग्रह किया था; किन्तु मुनि श्री ने अस्वीकार किया। फिर भी इस युवाचार्य पदादि महोत्सव के अवसर पर पूज्य श्री ने एवं मुनि-मण्डल ने प्रसिद्धवक्ता पं० मुनि श्री चौथमल जी म० से अत्याग्रह कर "जगद्वल्लभ जैन दिवाकर" की पदवी स्वीकार कर लेने के लिए कहा और फरमाया कि हाँ, आपका प्रभाव जैन-जैनेतर समाज में पदवी धारियों से भी कई गुणा विशेष है। अतः आपको पदवी दे देने में प्रभाव बढ़ाने का हमारा ध्येय नहीं है। केवल आप जैसे जैन-धर्म के महान् प्रभाविक पुरुषों को पदवी से सुशोभित करना मेरा और मुनि-मण्डल का परम कर्त्तव्य है। इसलिए इस पदवी को तो अब आप अवश्य स्वीकार करें। इस प्रकार की खबर स्थानीय श्री संघ को ज्ञात होते ही यह संघ इस शुभ सन्देश का समर्थन करता हुआ चतुर्विध श्री संघ को हर्ष-बधाई का यह समाचार पहुँचाता हुआ कृतकृत्य होता है।

भवदीय:—

श्री श्वे० स्था० जैन श्री संघ

मन्दसौर (मालवा)

उपस्थित साधु साध्वी श्रावक श्राविका चतुर्विध श्री संघ ने एक स्वर से सभी पदवियों का समर्थन किया तुमुल जय-ध्वनि से पण्डाल गूँज उठा। सभी के चेहरे पर प्रसन्नता की अपूर्व छवि थी। श्रीमान् पंडित सुख-मुनि जी महाराज के निम्नोक्त मुबारिकवाद की कविता पढ़ने के पश्चात् जयध्वनि

जनरल मीटिंग हुई। उसमें प्रस्ताव तो बहुत हुए; परन्तु एक खास प्रस्ताव यह था कि कान्फ्रेंस के प्रेसिडेन्ट श्री हेमचन्द भाई ने उपोद्घात खींच लेने के लिए संस्था को सूचना दी थी। उसी के मुताबिक उपोद्घात खींच लिया गया।

माघ शुक्ला १४ को उसी विशाल पण्डाल में व्याख्यान हुआ। व्याख्यान की समाप्ति पर सरयालिया म० ने इस तरह भाषण दिया—

पूज्यपाद वयोवृद्ध श्रीमान् खूबचन्द जी म० साहब तथा प्रसिद्ध वक्ता मुनि श्री चौथमल जी म० सा० तथा उपस्थित मुनि-मण्डल, प्रिय बन्धुओ, माताओ व बहिनों, आज का दिन बड़ा मंगलमय, पवित्र एवं सुहावना है जब कि सुदूर दूर-दराज से आई, बहन तथा माताएँ पूज्याचार्यादि-पदोत्सव तथा मुनिवरों के दर्शनार्थ आकर यहाँ सम्मिलित हुए हैं। ऐसा शुभ अवसर जिन्दगी में मिलना अत्यन्त दुर्लभ है जिसके लिए मुझे अत्यन्त आनन्द तथा हर्ष पैदा हो रहा है और इसी खुशी में कुछ बोलने का साहस कर रहा हूँ। क्योंकि, मैं न तो वक्ता ही हूँ और न कुछ पढ़ा-लिखा ही हूँ; इसलिए टूटे-फूटे दो-चार शब्द आपकी सेवा में आदरपूर्वक अर्ज करना चाहता हूँ। मुझे आशा है, आप हंसवत् ग्रहण कर अनुगृहीत करेंगे। आप ही कुछ भाग्यों होंगे या इच्छा भी करेंगे। जैन धर्म के आदि तीर्थंकर श्री ऋषभदेव जी से लेकर चरित्र नायक श्री भगवान महावीर पर्यन्त जितने भी तीर्थंकर हुए हैं

जनरल मीटिंग हुई। उसमें प्रस्ताव तो बहुत हुए, परन्तु एक खास प्रस्ताव यह था कि कान्फ्रेंस के प्रेसिडेन्ट श्री हेमचन्द भाई ने उपोद्घात खींच लेने के लिए संस्था को सूचना दी थी। उसी के मुताबिक उपोद्घात खींच लिया गया।

माघ शुक्ला १४ को उसी विशाल पण्डाल में व्याख्यान हुआ। व्याख्यान की समाप्ति पर सरवाडिया म० ने इस तरह भाषण दिया—

पूज्यपाद वयोवृद्ध श्रीमान् खूबचन्द जी म० साहब तथा प्रसिद्ध वक्ता मुनि श्री चौथमल जी म० सा० तथा उपस्थित मुनि-मण्डल, प्रिय बन्धुओ, माताओ व बहिनो, आज का दिन बड़ा मंगलमय, पवित्र एवं सुहावना है कि [illegible] से आई, बहन तथा माताएं युगाचार्यद्वि-शताब्दीत्सव तथा मुनिश्रियों के दर्शनार्थ हजार यहां सम्मिलित हुए हैं। ऐसे शुभ अवसर [illegible] में [illegible] है जिसके लिए मुझे [illegible] हो रहा है और इसी खुशी से कुछ बोलने का साहस कर रहा हूँ। [illegible], मैं न तो वक्ता हूँ और न कुछ पढ़ा-लिखा ही हूँ, [illegible]